16

पेस्टालॉजी का शैक्षिक चिन्तन

[Educational Thought of Pestalozzi]

पेस्टालॉजी का शैक्षिक चिन्तन
(Educational Thought of Pestalozzi)

पेस्टालॉजी का जन्म 12 जनवरी, 1746 को स्विटजरलैण्ड के ज्युरिक (Zuric) नगर में हुआ था। इनका पूरा नाम जॉन हैनरिक पेस्टालॉजी (John Heinrich Pestalozzi) था। इनके पिता चिकित्सक थे और माता सामान्य ग्रहणी। जब पेस्टालॉजी केवल 5 वर्ष के थे इनके पिता का देहान्त हो गया। ये तीन भाई बहन थे। अब इन तीनों बच्चों की देखभाल का पूरा उत्तरदायित्त्व इनकी माँ पर आ पड़ा। इस उत्तरदायित्त्व के निर्वाह में इनके पिता के समय की नौकरानी बबेली ने बहुत सहायता की। पेस्टालॉजी की माँ बहुत सरल एवं उदार स्वभाव की थीं और उनकी यह नौकरानी बबेली अष पैसों के लिए नहीं, सेवा भाव से इन बच्चों की देखभाल में सहायता कर रही थी। पेस्टालॉजी पर इन दोनों का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। पेस्टालॉजी में प्रारम्भ से ही प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, दया एवं सेवा के भाव विकसित हो गए।

पेस्टालॉजी का शैक्षिक चिन्तन इनके दार्शनिक चिन्तन और मनोवैज्ञानिक तथ्यों के ज्ञान पर आधारित है। इनके शैक्षिक चिन्तन पर इनके पूर्व विचारक रूसो की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। इन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में, विशेष रूप से बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में अनेक प्रयोग भी किए थे। इन्होंने अपने अनुभव एवं चिन्तन को पुस्तकों के रूप में भी संजोया है। शिक्षा की दृष्टि से इनकी तीन रचनाएँ विशेष महत्त्व की हैं—एक 'लियोनार्ड एण्ड गरट्रूड' (Leonard and Gertrude), दूसरी 'हाऊ गरट्रूड टीचिज हर चिल्ड्रन' (How Gertrude Teaches her Children) और तीसरी 'माइ इनवैस्टीगेशन्स इन टू द कोर्स ऑफ नेचर इन द डवलपमेन्ट ऑफ द ह्यूमेन रेस' (My Investigations into the Course of Nature in the Development of the Human race)। यहाँ पेस्टालॉजी के शैक्षिक विचारों का क्रमबद्ध वर्णन प्रस्तुत है।

शिक्षा का सम्प्रत्यय

पेस्टालॉजी ने शिक्षा को मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के विकास के रूप में परिभाषित किया है। इन्होंने मनुष्य के विकास की व्याख्या वृक्ष के विकास के आधार पर की है। इन्होंने स्पष्ट किया कि जिस प्रकार वृक्ष के बीज में सम्पूर्ण वृक्ष निहित होता है और जिस प्रकार बीज के वृक्ष में विकसित होने के लिए उचित वातावरण की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शिशु में पूर्ण मनुष्य निहित होता है और शिशु को पूर्ण मनुष्य के रूप में विकसित होने के लिए उचित वातावरण की आवश्यकता होती है और इस वातावरण में सर्वाधिक भूमिका शिक्षा की होती है। पेस्टालॉजी के युग में शिक्षा का अर्थ बच्चों को बाहर से ज्ञान प्रदान करने से लिया जाता था। पेस्टालॉजी ने इसके ठीक विपरीत विचार प्रस्तुत किया और कहा कि शिक्षा का अर्थ बाहर से ज्ञान ढूँसना नहीं, अपितु मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करना एवं विकसित करना है। यह विकास प्राकृतिक, सम और प्रगतिशील होना चाहिए। इन्होंने शिक्षा को इसी आधार पर परिभाषित किया है। इनके शब्दों में—'शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है (Education is a natural, harmonious and progressive development of man's innate powers)।

Scanned with CamScanner

शिक्षा के उद्देश्य

पेस्टालॉजी शिक्षा द्वारा मनुष्य को एक अच्छा मनुष्य बनाने पर बल देते थे। इनका विश्वास था कि जब तक प्रत्येक मनुष्य को अच्छा मनुष्य नहीं बनाया जाता तब तक न तो व्यष्टि सुखी हो सकता है और न समाज सुखी हो सकता है। इसके लिए ये सर्वप्रथम मनुष्य की जन्मजात शक्तियों के प्राकृतिक, समरस और प्रगतिशील विकास पर बल देते थे और उसके बाद उनमें मानवीय गुणों–प्रेम, सहानुभूति, दया एवं परोपकार आदि के विकास पर बल देते थे। ये मनुष्यों के दुःखों को दूर करने के लिए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर भी बल देते थे उन्हें अपनी जीविका कमाने योग्य बनाना चाहते थे। इस सबके साथ ये मनुष्यों को धर्म और नैतिकता की शिक्षा भी देना चाहते थे। इनका मत था कि धर्म एवं नैतिकता ही मनुष्य को मनुष्य बनाते हैं और ये सब कार्य ये प्राथमिक स्तर से ही शुरू करने के पक्ष में थे। पेस्टालॉजी द्वारा निश्चित शिक्षा के इन उद्देश्यों को निम्नलिखित रूप में क्रमबद्ध किया जा सकता है—

1. मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास — पेस्टालॉजी के अनुसार मनुष्य में तीन प्रकार की आन्तरिक शक्तियाँ हैं—शारीरिक, मानसिक और नैतिक। शिक्षा का पहला उद्देश्य एवं कार्य इन शक्तियों का प्राकृतिक, समरस एवं प्रगतिशील विकास करना है।

2. मनुष्य में मानवीय गुणों का विकास — पेस्टालॉजी के समय उसके देश के लोगों में मानवीय गुणों—प्रेम, सहानुभूति, दया, परोपकार एवं उदारता का बड़ा अभाव था। पेस्टालॉजी शिक्षा द्वारा मनुष्यों में इन गुणों के विकास पर बहुत बल देते थे।

3. मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना — पेस्टालॉजी के समय इनके देश के अधिकतर लोग दुःखी थे। इस दुःख का सबसे बड़ा कारण परनिर्भरता था। इसलिए इन्होंने मनुष्यों को आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया। मनुष्यों को आत्मनिर्भर बनाने से इनका तात्पर्य उन्हें अपनी जीविका स्वयं कमाने योग्य बनाना था। इसके लिए ये उन्हें किसी व्यवसाय की शिक्षा देने पर बल देते थे। इसे ही आज व्यावसायिक शिक्षा का उद्देश्य कहते हैं।

4. सामाजिक उत्थान करना — पेस्टालॉजी के अनुसार समाज की उन्नति व्यक्ति की उन्नति पर निर्भर करती है इसलिए इन्होंने सर्वप्रथम मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों के विकास और उनमें मानवीय गुणों के विकास एवं उन्हें आत्मनिर्भर बनाने पर बल दिया है। इस सब से समाज का विकास स्वतः हो जाएगा।

5. धार्मिकता एवं नैतिकता का विकास — ये मनुष्य के आचरण को धर्म एवं नैतिक्रता पर आधारित करना चाहते थे। इनका विश्वास था कि ये ही मनुष्य के आचरण को स्थायी आधार प्रदान करते हैं। इनकी दृष्टि से यह शिक्षा का सर्वोच्च उद्देश्य होना चाहिए!

शिक्षा की पाठ्यचर्या

पेस्टालॉजी ने मूलरूप से स्कूली शिक्षा (3 से 13 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा) की पाठ्यचर्या पर विचार व्यक्त किए हैं। इनकी दृष्टि से सर्वप्रथम बच्चों की आन्तरिक शक्तियों का विकास करना चाहिए। इसके लिए ये बच्चों को खेलने-कूदने, अपने चारों ओर की वस्तुओं को देखने-समझने और प्राकृतिक निरीक्षण करने के अवसर प्रदान करने पर बल देते थे। भाषा को ये अभिव्यक्ति का साधन मानते थे, इसलिए प्रारम्भिक स्तर की पाठ्यचर्या में सबसे पहले उसे स्थान देते थे। इनकी दृष्टि से कला एवं संगीत भी भावाभिव्यक्ति के विकास में सहायक होते हैं, इन्होंने अपने स्कूल की पाठ्यचर्या में इन्हें भी स्थान दिया था। पेस्टालॉजी ने विशेष रूप से दीन-हीनों की शिक्षा की व्यवस्था में रुचि ली थी इसलिए प्रारम्भ से ही उन्हें किसी व्यवसाय (कृषि फार्म, कताई-बुनाई आदि) की शिक्षा देने पर बल देते थे। धर्म एवं नैतिकता को ये मनुष्य जीवन का आधार मानते थे इसलिए प्रारम्भ से ही इनकी शिक्षा की बात करते थे। इन्हें ये मानवीय गुणों के विकास का आधार मानते थे। इनकी दृष्टि से कोई भी शिक्षा यदि वह बच्चों को मानवीय आचरण में दक्ष नहीं करती तो वह अधूरी शिक्षा है।

शिक्षण विधि

शिक्षण विधियों के सम्बन्ध में पेस्टालॉजी रूसो से प्रभावित थे। इन्होंने शिक्षा की प्रक्रिया को मनोविज्ञान पर आधारित करने का प्रयत्न किया, शिक्षण की प्रक्रिया को भी। इन्होंने बाल मस्तिष्क की तीन अवस्थाएँ बताईं।

Scanned with CamScanner

प्रथम, **अस्पष्ट इन्द्रियगत अनुभव**। इस स्तर पर मस्तिष्क इन्द्रियों द्वारा वस्तु के आकार को अस्पष्ट रूप में धारण करता है। द्वितीय, **स्पष्ट इन्द्रियगत अनुभव** इस स्तर पर वह उसे स्पष्ट रूप में धारण करता है। और तृतीय, **वर्गीकरण स्तर** इस स्तर पर वह वास्तविक ज्ञान प्राप्त करता है। पेस्टालॉजी की दृष्टि से बच्चे इसी क्रम में सीखते हैं अतः विद्यालयों में भी हमें उन्हें इसी क्रम में सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिए। ये क्रियाओं और भावनाओं को भी इसी क्रम में सीखने-सिखाने पर बल देते थे। इन्होंने आगे कहा कि इस प्रकार प्राप्त ज्ञान को स्थायी बनाने के लिए अभ्यास एवं आवृत्ति के अवसर प्रदान करने चाहिए। पेस्टालॉजी अभ्यास एवं आवृत्ति विधि के जनक माने जाते हैं।

पेस्टालॉजी के शिक्षण सम्बन्धी विचारों को आज शिक्षण सिद्धान्तों के रूप में जाना जाता है। ये सिद्धान्त हैं—

1. मनोवैज्ञानिक आधार का सिद्धान्त — पेस्टालॉजी ने इस बात पर बल दिया कि बच्चों की शिक्षा उनके मनोविज्ञान पर आधारित होनी चाहिए, शिक्षण विधियाँ भी। बच्चे स्वतन्त्र रहना पसन्द करते हैं अतः उन्हें स्वतन्त्र रूप से सीखने के अवसर देने चाहिए। बच्चों में क्रिया करने की प्रवृत्ति होती है अतः उन्हें करके सीखने के अवसर प्रदान करने चाहिए। उनके सीखने की अपनी गति होती है अतः उन्हें अपनी गति से सीखने देना चाहिए। यही कारण है कि पेस्टालॉजी ने अपने शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम में मनोविज्ञान के अध्ययन को सर्वप्रमुख स्थान दिया था।

2. इन्द्रियों द्वारा शिक्षा का सिद्धान्त — पेस्टालॉजी इन्द्रियों को ज्ञान प्राप्ति का आधार मानते थे। इन्द्रियों द्वारा शिक्षा के सिद्धान्त पर इन्होंने एक विधि का विकास भी किया जिसे जर्मन भाषा में **आन्स्वांग** (Anschaung) कहते हैं। इस विधि में बच्चे इन्द्रियानुभव द्वारा सीखते हैं, निरीक्षण द्वारा सीखते हैं और स्वयं के प्रयत्न द्वारा सीखते हैं। पेस्टालॉजी आकार (रूप), संख्या और भाषा की शिक्षा इसी विधि से दिया करते थे।

3. मानसिक क्रिया का सिद्धान्त — पेस्टालॉजी ने इस बात पर बल दिया कि बच्चों को उनके मस्तिष्क की अवस्थाओं के आधार पर सीखने के अवसर दिए जाए। सर्वप्रथम बच्चों को वस्तुओं, क्रियाओं और भावों, सभी का ज्ञान प्रत्यक्ष इन्द्रियानुभवों द्वारा कराया जाए, इसके बाद उनके प्रथम इन्द्रियजन्य अस्पष्ट ज्ञान को अन्य इन्द्रियजन्य ज्ञान के आधार पर स्पष्ट ज्ञान में परिवर्तित किया जाए और अन्त में अभ्यास एवं आवृत्ति द्वारा सीखे हुए ज्ञान को स्थायी रूप प्रदान किया जाए।

4. सरल से कठिन की ओर चलने का सिद्धान्त — पेस्टालॉजी ने इस बात पर भी बल दिया कि जो कुछ भी पढ़ाना-सिखाना हो पहले बच्चों को उसके सरल रूप को सीखने के अवसर प्रदान किए जाएँ, फिर कठिन से कठिनतर। बच्चे पहले किसी तथ्य से सम्बन्धित सरल समस्याओं को हल करें, फिर कठिन और उसके बाद कठिनतर को।

5. दृढ़िकरण का सिद्धान्त — पेस्टालॉजी ने इस बात पर विशेष बल दिया कि जब तक बच्चों को एक तथ्य पूर्णतया स्पष्ट न हो जाए तब तक उससे आगे के तथ्य पर न बढ़ा जाए।

पेस्टालॉजी ने अपने उपरोक्त सिद्धान्तों के आधार पर भिन्न-भिन्न विषयों एवं क्रियाओं के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए भिन्न-भिन्न विधियों का विकास भी किया था। यहाँ उनका संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत है।

आन्तरिक शक्तियों का विकास एवं प्रशिक्षण — पेस्टालॉजी प्रारम्भ से ही बालकों को खेलने-कूदने, निरीक्षण करने एवं बोलने-चालने के स्वतन्त्र अवसर देते थे, साथ ही स्वयं निरीक्षण करने, स्वयं क्रिया करने और स्वयं अनुभव करने के अवसर देते थे। इससे बच्चों की अन्तःशक्तियों का विकास स्वतः होता था, स्वाभाविक रूप से होता था।

भाषा शिक्षण — पेस्टालॉजी भाषा की शिक्षा वार्तालाप से शुरू करने के पक्ष में थे। इनके अनुसार जब बच्चा बोलचाल में दक्ष हो जाए तब उसे पढ़ना सिखाया जाए। पढ़ना सिखाने के लिए पेस्टालॉजी सर्वप्रथम स्वर ध्वनि, स्वर ध्वनियों के बाद शब्द और शब्दों के बाद वाक्य पढ़ना सिखाते थे। लिखने को पेस्टालॉजी ने यान्त्रिक कला के रूप में लिया है। लिखना, सिखाने के लिए ये सर्वप्रथम बच्चों को सीधी, तिरछी एवं गोल रेखाएँ खींचने

Scanned with CamScanner

का अभ्यास कराते थे, फिर अक्षरोच्चरण के साथ अक्षर, शब्दोच्चारण के साथ शब्द और वाक्य बोलने के साथ वाक्य लिखना सिखाते थे।

अंकगणित शिक्षण — पेस्टालॉजी पहले मौखिक अंकगणित सिखाते थे और मौखिक अंकगणित सिखाने के बाद लिखित अंकगणित सिखाते थे। मौखिक अंकगणित सिखाने के लिए ये वातावरण की वस्तुओं का प्रयोग करते थे, कभी उनका योग पूछते थे, कभी उनमें से कुछ को हटाकर शेष पूछते थे। और इसी प्रकार गुणा-भाग करवाते थे। मौखिक अभ्यास होने के बाद लिखित समस्याओं को हल करने को कहते थे।

रेखागणित शिक्षण — रेखागणित का ज्ञान भी ये प्रत्यक्ष विधि से कराते थे। पहले बच्चों को रेखागणितीय आकृतियाँ दिखाते थे, फिर उन आकृतियों को बनाने के लिए कहते थे और इसके बाद उनके बीच सम्बन्ध देखने-समझने का अवसर देते थे।

भूगोल शिक्षण, प्रकृति अध्ययन एवं औद्योगिक शिक्षा — भूगोल का शिक्षण और प्रकृति अध्ययन के लिए पेस्टालॉजी अवलोकन एवं निरीक्षण विधियों का प्रयोग करते थे और व्यावसायिक शिक्षण के लिए अवलोकन, अभ्यास एवं आवृत्ति विधियों का प्रयोग करते थे।

विज्ञान शिक्षण — विज्ञान शिक्षण के लिए ये अवलोकन, निरीक्षण और आगमन विधियों का प्रयोग करते थे और शिक्षण कार्य को बच्चों के विकास के आधार पर नियोजित करने पर बल देते थे।

नैतिक शिक्षा — पेस्टालॉजी के अनुसार नैतिक शिक्षा की अलग से व्यवस्था करने की आवश्यकता नहीं है। विद्यालयों का वातावरण एवं कार्य प्रणाली कुछ ऐसी होनी चाहिए कि बच्चे ईश्वर में विश्वास करें, एक-दूसरे से प्रेम करें, एक-दूसरे का सहयोग करें और एक-दूसरे की सेवा करें। इसके लिए ये शिक्षक-शिक्षार्थी में पिता-पुत्र के से निकट सम्बन्धों को महत्त्व देते थे।

अनुशासन

पेस्टालॉजी बच्चों के प्रति प्रेमपूर्ण व्यवहार करने पर बल देते थे। इनकी दृष्टि से बच्चों को अनुशासन की शिक्षा भी प्रेमपूर्ण व्यवहार से देनी चाहिए, उन्हें किसी प्रकार के दण्ड द्वारा नहीं। और जब कभी बच्चे कोई अनुचित आचरण करें तब भी उन्हें प्रेमपूर्वक समझाना चाहिए। इनका विश्वास था कि प्रेम भरे पर्यावरण में बच्चों के अनुशासनहीन होने का प्रश्न ही नहीं उठता। इनके शब्दों में—'अनुशासन प्रेम द्वारा ही स्थापित एवं नियन्त्रित होना चाहिए.(Discipline should be based on and controlled by love)।

शिक्षक

पेस्टालॉजी ने शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान किया। ये शिक्षक से पहली अपेक्षा यह करते थे कि उन्हें बच्चों के मनोविज्ञान और सीखने-सिखाने के मनोविज्ञान का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिए। इन्हें विश्वास था कि तब शिक्षक बच्चों को विकास के स्वतन्त्र अवसर देंगे, उनके स्वाभाविक विकास में सहायक का कार्य करेंगे और उनके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करेंगे। ये शिक्षक-शिक्षार्थी के बीच पिता-पुत्र जैसे सम्बन्ध स्थापित करने की बात करते थे। इनका मत था कि शिक्षकों को सदैव सेवा भाव से कार्य करना चाहिए।

शिक्षार्थी

पेस्टालॉजी बालक को दैवी कृति के रूप में लेते थे। फिर ये अपने जीवन में प्रायः दीन-हीनों की शिक्षा व्यवस्था में ही लगे रहे और उनके प्रति इनके हृदय में बड़ा प्रेम व सहानुभूति थी। ये इस बात पर बल देते थे कि एक ओर बालक के व्यष्टित्व का आदर करना चाहिए और दूसरी ओर समाज के हित की बात सोचनी चाहिए। बालक का विकास कुछ इस रूप में करना चाहिए कि उसका भी विकास हो और उसके विकास से समाज का भी विकास हो। ये बालक को समाज का वैयष्टिक अंग मानते थे।

विद्यालय

पेस्टालॉजी के विद्यालय सम्बन्धी विचार भी प्राथमिक विद्यालयों तक सीमित हैं। ये प्राथमिक विद्यालयों को घर के रूप में बदलने के पक्ष में थे, उनमें प्रेम तथा सहानुभूतिपूर्ण वातावरण बनाने के पक्ष में थे। इनका

Scanned with CamScanner

मत था कि ऐसे वातावरण में ही बच्चों का स्वाभाविक विकास हो सकता है और वे प्रेम सहयोग एवं सेवा का सच्चा पाठ पढ़ सकते हैं। पर साथ ही ये विद्यालयों को व्यवस्थित रूप से चलाने पर बल देते थे। इन्होंने अपने यवर्दन स्थित विद्यालय में 3 से 13 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की थी। इसमें 3 से 8 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा को **प्राइमरी शिक्षा** कहा जाता था। इस स्तर पर समय सारिणी का कोई बन्धन नहीं था। 8 से 11 वर्ष आयु के बच्चों की शिक्षा को **लोअर शिक्षा** और 11 से 13 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा को **अपर शिक्षा** कहा जाता था। इन स्तरों के लिए नियमित समय सारिणी होती थी। इन दोनों स्तर पर 60–60 मिनट के घण्टे (Periods) होते थे और प्रत्येक घण्टे के बाद छोटा सा अवकाश दिया जाता था। कुल मिलाकर 10 घण्टे होते थे। अन्त में शिक्षक और छात्र मिलते थे और छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाइयों को दूर किया जाता था। इस प्रकार लगभग 12 घण्टे (Hours) स्कूल कार्य चलता था और मजे की बात यह है कि बच्चे थकते नहीं थे, ऊबते नहीं थे।

शिक्षा के अन्य पक्ष

जन शिक्षा — पेस्टालॉजी जन शिक्षा के सबसे बड़े समर्थक थे। इनकी दृष्टि से शिक्षा मनुष्य का जन्मसिद्ध अधिकार है। ये तो अपने जीवन में दीन-हीनों की शिक्षा में ही लगे रहे और उनके उत्थान के लिए ही प्रयत्न करते रहे।

स्त्री शिक्षा — स्त्री शिक्षा के विषय में पेस्टालॉजी ने अलग से तो कुछ नहीं लिखा है परन्तु उनका यह विचार कि शिक्षा ही समाज सुधार का मूल आधार है, स्त्री शिक्षा के महत्त्व को स्पष्ट करता है।

व्यावसायिक शिक्षा — पेस्टालॉजी जानते थे कि मनुष्यों की दीनता का मुख्य कारण उनका आत्मनिर्भर न होना है। इन्होंने दीन-हीन बच्चों को व्यावसायिक शिक्षा देकर उन्हें स्वावलम्बी बनाने का प्रयत्न भी किया।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा — पेस्टालॉजी बच्चों को पहले अच्छा मनुष्य बनाने पर बल देते थे और इसके लिए धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा को आवश्यक मानते थे। उनकी दृष्टि से धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था शिशु काल से ही शुरु होनी चाहिए, घर में भी होनी चाहिए और विद्यालयों में भी होनी चाहिए पर यह शिक्षा शब्दों के माध्यम से नहीं, वातावरण के माध्यम से दी जानी चाहिए; धार्मिक एवं नैतिक आचरण के माध्यम से दी जानी चाहिए।

पेस्टालॉजी के शैक्षिक चिन्तन का मूल्यांकन
(Evaluation of Educational Thought of Pestalozzi)

पेस्टालॉजी ने मनुष्य के विकास क्रम को एक वृक्ष के विकास क्रम के रूप में लिया है और उसी आधार पर शिक्षा की प्रक्रिया के स्वरूप को निश्चित किया है। इन्होंने कहा—जिस प्रकार एक वृक्ष के बीज में पूर्ण वृक्ष निहित होता है उसी प्रकार एक शिशु में पूर्ण मनुष्य निहित होता है, शिक्षा का कार्य इस शिशु के मनुष्य रूप में विकसित होने में सहायता भर करना है। और इसी आधार पर इन्होंने शिक्षा की प्रक्रिया को परिभाषित किया है। इनके अपने शब्दों में— 'शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरस और प्रगतिशील विकास है।

इस सन्दर्भ में पहली बात तो यह है कि वृक्ष और मनुष्य के विकास में मूलभूत अन्तर होता है, वृक्ष का केवल भौतिक विकास होता है जब कि मनुष्य का भौतिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक सभी प्रकार का विकास होता है। दूसरी बात यह है कि वृक्ष वही रूप धारण करता है जो उसके बीज में निहित होता है परन्तु मनुष्य बीज में निहित रूप के साथ-साथ वह रूप भी धारण करता है जो उसके पर्यावरण में होता है, वह अपने पर्यावरण की भाषा सीखता है और अपने पर्यावरण की वस्तुओं एवं क्रियाओं का ज्ञान करता है, आदि। तीसरी बात यह है कि वृक्ष अपनी वृद्धि (Growth) तक सीमित रहता है और मनुष्य वृद्धि के साथ-साथ निरन्तर विकास (Development) भी करता है। इस दृष्टि से शिक्षा के सम्प्रत्यय सम्बन्धी पेस्टालॉजी के विचार अधूरे ही कहे जाएँगे। हमें उनके विचारों से केवल एक ही बात लेनी चाहिए और वह यह है कि मनुष्य में अपनी वृद्धि एवं विकास दोनों की शक्तियाँ बीज रूप में निहित होती हैं, हमें पहले उन शक्तियों का विकास करना चाहिए और उसके बाद उनके आधार पर मनुष्य को जो कुछ बनाना चाहते हैं, उसे वह बनाना चाहिए।

Scanned with CamScanner

शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करते समय पेस्टालॉजी ने मनुष्य के प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों पक्षों को सामने रखा है और उसी क्रम में शिक्षा के उद्देश्य निश्चित किए हैं— मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों का विकास, उनमें मानवीय गुणों का विकास, उन्हें आत्म निर्भर बनाना, उनके समाज का उत्थान करना और उनका आध्यात्मिक विकास करना।

यदि पेस्टालॉजी द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों को ध्यानपूर्वक देखें-समझें तो स्पष्ट होता है कि इनमें मनुष्य के तीनों पक्षों प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक का विकास समाहित है, बस इन पक्षों के उपपक्षों को स्पष्ट नहीं किया गया है। आज शिक्षा द्वारा मनुष्य की आन्तरिक शक्तियों के विकास के स्थान पर उसके शारीरिक एवं मानसिक विकास शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, सामाजिक उत्थान के स्थान पर सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास की बात कही जाती है और आत्मनिर्भर बनाने के स्थान पर व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया जाता है। और चूँकि आज शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का कर्त्तव्य है इसलिए उसके द्वारा नागरिकता की शिक्षा की बात भी कही जाती है। और चूँकि मनुष्य प्रगतिशील प्राणी है तो उसे वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए तैयार करने की भी बात कही जाती है।

पेस्टालॉजी ने मूलरूप से 3 से 13 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा की चर्चा की है और उन्हीं के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण किया है और उसमें प्रारम्भ से ही खेल-कूद, देखने-समझने और प्रकृति निरीक्षण करने पर बल दिया है और उसके बाद बच्चों की अपनी योग्यता एवं क्षमतानुसार भाषा, अंकगणित, रेखागणित, भूगोल, सामान्य व्यवसाय (खेती, कताई-बुनाई आदि) और धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा की व्यवस्था पर बल दिया है।

पेस्टालॉजी का यह विचार आज भी मान्य है कि शिक्षा के किसी भी स्तर की पाठ्यचर्या का निर्माण उस स्तर के बच्चों की योग्यता एवं क्षमता के आधार पर करना चाहिए, पाठ्यचर्या क्रियाशीलता पर आधारित होनी चाहिए और बच्चों के अनुभव क्षेत्र की होनी चाहिए। यह बात दूसरी है कि अब व्यावसायिक शिक्षा विज्ञान और तकनीकी पर आधारित होने के कारण प्रारम्भिक स्तर पर शुरू नहीं की जा सकती और हमारे धर्मनिरपेक्ष भारत में किसी धर्म विशेष की शिक्षा नहीं दी जा सकती।

शिक्षा और शिक्षण को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करने वालों में पेस्टालॉजी पहली पंक्ति में आते हैं। इस क्षेत्र में ये रूसो से प्रभावित थे। इन्होंने रूसो के कार्य को आगे बढ़ाया—आन्श्वांग विधि का निर्माण किया, अभ्यास एवं आवृत्ति विधि का विकास किया और सीखने-सिखाने के मनोवैज्ञानिक सूत्र—सरल से कठिन की ओर चलो एवं जब एक तथ्य स्पष्ट हो जाए तब दूसरे तथ्य की ओर बढ़ो, का निर्माण किया और साथ ही अपने इन सिद्धान्तों के आधार पर भिन्न-भिन्न विषयों को पढ़ाने की भिन्न-भिन्न विधियों का निर्माण किया।

पेस्टालॉजी द्वारा निर्धारित शिक्षण सम्बन्धी उपरोक्त सिद्धान्त आज सभी शिक्षाविदों को मान्य हैं। जहाँ तक भाषा शिक्षण की बात है उसे वार्तालाप से शुरू करने पर भी सब सहमत हैं पर उनके अक्षर से शब्द और शब्द से वाक्य की शिक्षा के सम्बन्ध में मतभेद है। आज अधिकतर विद्वान वाक्य से शब्द और शब्द से अक्षर ज्ञान कराने पर बल देते हैं। जहाँ तक हिन्दी भाषा को सिखाने की बात है, हम चर्चा चाहे जिस सिद्धान्त की करें पर हमारे देश में अति प्राचीन काल से भाषा की शिक्षा पेस्टालॉजी द्वारा निश्चित क्रम में ही दी जाती आ रही है। अन्य विषयों को स्वयं करके सीखने की बात तो आज सभी को मान्य है।

पेस्टालॉजी बड़ी दयालु प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। ये दीन-हीन बच्चों को पढ़ाते थे, ये उन्हें प्रेम करते थे, उन्हें अपने शब्दों से भी आहत नहीं करते थे। ये दूसरे शिक्षकों से भी यही अपेक्षा करते थे। इनके अनुसार बच्चों को सच्चे अनुशासन की शिक्षा प्रेम द्वारा देनी चाहिए और यदि वे कभी भूल करें अथवा अन्यथा व्यवहार करें तो भी प्रेम से समझाना चाहिए, उन्हें किसी प्रकार का दण्ड नहीं देना चाहिए।

इस सन्दर्भ में हमारा अपना अनुभव तो यह है कि कुछ परिस्थितियों में दण्ड देना बड़ा लाभकर होता है, परन्तु हम दण्ड देने में पेस्टालॉजी के प्रेम के सिद्धान्त को याद करने के पक्ष में हैं, दण्ड भी दो तो प्यार के साथ दो, क्रोध के साथ नहीं।

पेस्टालॉजी शिक्षक से यह अपेक्षा करते थे कि वह बच्चों के और साथ ही सीखने-सिखाने के मनोविज्ञान को पहले सीखें-समझें और फिर इस क्षेत्र में कार्य करें। दूसरी अपेक्षा वे शिक्षकों से यह करते थे कि वे बच्चों

Scanned with CamScanner

के साथ पिता तुल्य व्यवहार करें, इस कार्य को सेवाभाव से करें। शिक्षार्थी को ये शिक्षा का केन्द्र बिन्दु मानते थे, किसी भी स्तर की शिक्षा उस स्तर के बच्चों की योग्यता एवं क्षमता पर आधारित करने पर बल देते थे।

आज शिक्षक-शिक्षार्थी के सम्बन्ध में पेस्टालॉजी के विचारों से सभी शिक्षाशास्त्री सहमत हैं परन्तु हमारी दृष्टि से अति किसी भी चीज की बुरी होती है। फिर इस भौतिकवादी युग में शिक्षकों से केवल सेवाभाव से कार्य करने की अपेक्षा करना एक दिवा स्वप्न ही कहा जाएगा, इस क्षेत्र में मध्यम मार्ग ही उपयुक्त होगा।

पेस्टालॉजी ने केवल 3 से 13 वर्ष तक के बच्चों के विद्यालयों के स्वरूप पर विचार व्यक्त किए हैं। इन्होंने स्वयं अपने विद्यालय को घर का स्वरूप दिया था जिसके प्रेम भरे वातावरण में एक-एक घण्टे (Hours) के 10 घण्टे (Periods) होने के बाद भी बच्चे थकते नहीं थे।

पेस्टालॉजी एक तरफ शिक्षा और शिक्षण को मनोविज्ञान पर आधारित करने की बात करते हैं और दूसरी तरफ इन्होंने अपने ही विद्यालय में एक-एक घण्टे के 10 घण्टे और कुल मिलाकर 12 घण्टे का कार्यक्रम चला रखा था। आज उनके इन विरोधी विचारों से कोई भी सहमत नहीं हो सकता। बच्चे बड़े चंचल होते हैं, वे 60 मिनट तक एक ही विषय में ध्यान केन्द्रित नहीं कर संकते इसलिए अब शिशु स्तर पर समय का कोई बन्धन नहीं किया जाता, प्राथमिक स्तर पर 30-30 मिनट के घण्टे रखे जाते हैं, माध्यमिक स्तर 40-40 मिनट के और उच्च स्तर पर 45 से 90 मिनट तक के।

पेस्टालॉजी ने शिक्षा को बच्चों का जन्म सिद्ध अधिकार बताया। आज तो यह बात पूरा संसार मानता है। इन्होंने गरीबी दूर करने के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर बल दिया। आज जीवन स्तर को ऊँचा उठाने के लिए उसकी शिक्षा पर बल दिया जाता है। इन्होंने लड़के-लड़कियों दोनों की शिक्षा पर समान बल दिया। आज इनके इस विचार से पूरा संसार सहमत है। बस धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के सन्दर्भ में उनके विचार थोड़े संकीर्ण हैं—इन्होंने धर्म के नाम पर ईसाई धर्म की शिक्षा पर बल दिया है और आज के शिक्षाविद् मानवीय मूल्यों एवं नैतिकता पर बल देते हैं।

पेस्टालॉजी का प्रभाव

पेस्टालॉजी के शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोगों का प्रभाव शिक्षा के सिद्धान्त एवं प्रयोग दोनों पक्षों पर पड़ा। इनके समय तक शिक्षा का अर्थ बच्चों को बाहर से ज्ञान देने से समझा जाता था, पेस्टालॉजी ने इसे आन्तरिक शक्तियों के आधार पर विकसित करने पर बल दिया। परिणामतः शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित होने लगी और बच्चों के मनोविज्ञान और सीखने के मनोविज्ञान पर आधारित होने लगी। अब तक बच्चों को कठोर नियन्त्रण में रखा जाता था, पेस्टालॉजी के प्रभाव से उनके साथ प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार किया जाने लगा। अब तक उन्हें सब कुछ अपनी ओर से बताया जाता था, पेस्टालॉजी के प्रभाव से उन्हें स्वयं करके स्वयं सीखने के अवसर दिए जाने लगे। कुल मिलाकर शिक्षा बाल केन्द्रित होने लगी। शिक्षकों को इस कला में प्रशिक्षित करने के लिए पेस्टालॉजी ने शिक्षक प्रशिक्षण की शुरुआत की। सच पूछिए तो किसी भी देश में शिक्षक शिक्षा का जो वर्तमान स्वरूप है उसकी नींव पेस्टालॉजी ने ही रखी थी। पेस्टालॉजी के शिष्य हरबार्ट द्वारा विकसित अनुदेशन प्रणाली और फ्रोबेल द्वारा विकसित खेल विधि का प्रयोग आज पूरे संसार में किया जाता है। पेस्टालॉजी आधुनिक प्रगतिशील शिक्षा के जनक माने जाते हैं।

उपसंहार

पेस्टालॉजी का पूरा जीवन आर्थिक कठिनाइयों के बीच बीता था इसलिए ये दीन-हीनों के दुःख-दर्द को जानते थे। सच पूछिए तो इन्होंने मूल रूप से उन्हीं के बच्चों की शिक्षा के सम्बन्ध में विचार व्यक्त किए हैं, यह बात दूसरी है कि उनके कुछ विचार किसी भी समाज के किसी भी वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए उपयोगी हैं। पेस्टालॉजी रूसो के शैक्षिक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए जाने-पहचाने जाते हैं। ये उन पहले चन्द व्यक्तियों में हैं जिन्होंने बच्चों की शिक्षा को मनोविज्ञान पर आधारित करने का प्रयास किया, बच्चों की शिक्षा को उनकी अपनी योग्यता एवं क्षमता पर आधारित करने का प्रयास किया और बच्चों को इन्द्रियों द्वारा सीखने एवं स्वयं करके स्वयं के अनुभव से सीखने के अवसर प्रदान किए और दण्ड आधारित व्यवस्था के स्थान पर

Scanned with CamScanner

प्रेम आधारित व्यवस्था पर बल दिया। जन शिक्षा की इनकी माँग ने इन्हें उस युग का ही नहीं, युग-युग का महान व्यक्ति बना दिया। शिक्षक प्रशिक्षण की व्यवस्था करना इनका स्वयं बड़ा कार्य था। पेस्टालॉजी वास्तव में शिक्षा के एक बड़े मसीहा थे।

परीक्षण प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. पेस्टालॉजी के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का वर्णन कीजिए।
2. एक शैक्षिक चिन्तक के रूप में पेस्टालॉजी का मूल्यांकन कीजिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न

3. पेस्टालॉजी ने शिक्षा के क्या उद्देश्य निश्चित किए हैं?
4. पेस्टालॉजी के शिक्षण सम्बन्धी सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए।
5. पेस्टालॉजी की आन्श्वांग विधि का परिचय दीजिए।

Scanned with CamScanner